Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

Original Article

जनपद प्रयागराज के जीव - जन्तुओं द्वारा शहरी क्षेत्र में स्वच्छ पर्यावरण संरक्षण पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव

प्रेम कुमार पटेल
निदेशक / वरिष्ठ वैज्ञानिक - पी एफ ए अनुसंधान संस्थान उत्तर प्रदेश
(AWBI, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ)
ईमेल: pkpatelhawoawbi@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180517
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 5(A)
Pp. 74-75
May- 2026
Submitted: 15 Apr. 2026
Revised: 25 Apr. 2026
Accepted: 10 May. 2026
Published: 31 May 2026

सारांश :

प्रस्तुत शोधपत्र में जनपद प्रयागराज के शहरी क्षेत्रों में आवारा जीव-जन्तुओं द्वारा स्वच्छ पर्यावरण संरक्षण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों का अध्ययन किया गया है। प्रयागराज एक प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी है, जहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं। किन्तु शहर में बढ़ती आवारा पशुओं की संख्या जल एवं वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न कर रही है। इन जीव-जन्तुओं द्वारा सड़कों, गलियों तथा सार्वजनिक स्थानों पर किए जाने वाले मल-मूत्र से पर्यावरण प्रदूषित होता है तथा यातायात व्यवस्था भी प्रभावित होती है। इनके अपशिष्ट जल स्रोतों में पहुँचकर जल प्रदूषण को बढ़ाते हैं। शोधपत्र में नगर निगम द्वारा पशुओं के पंजीकरण, आवारा पशुओं के नियंत्रण, पशु जन्म नियंत्रण तथा एंटी-रेबीज टीकाकरण जैसी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। निष्कर्षतः स्वच्छ एवं स्वस्थ शहरी पर्यावरण के संरक्षण हेतु स्थानीय प्रशासन, पशुपालकों तथा नागरिकों की संयुक्त सहभागिता आवश्यक है।

मुख्यशब्द: *शहरी विकास, पर्यावरण संरक्षण, आवारा जीव-जन्तु, प्रदूषण नियंत्रण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, यातायात व्यवस्था, नगर निगम, पशु जन्म नियंत्रण, स्वस्थ जीवन।*

परिचय - जनपद प्रयागराज तो पवित्र धर्म स्थली के रूप में सदियों से जाना जाता है। यहां पर देश - विदेश से लाखों श्रद्धालु दर्शन करने के लिए हमेशा आते-जाते रहते हैं। लेकिन यही प्रयागराज धर्म स्थली अब आवारा जीव-जन्तुओं के कारण प्रदूषण का मुख्य कारण बन गया है। यहां के स्वच्छ पर्यावरण संरक्षण पर प्रदूषण का ग्रहण लग चुका है। हमारे प्रयागराज जनपद का स्वच्छ पर्यावरण अब व्यापक प्रदूषण के रूप में तब्दील हो चुका है।

समस्या - प्रयागराज जनपद में सबसे ज्यादा समस्या जल प्रदूषण और वायु प्रदूषण की है। हमारे प्रयागराज जनपद के अधिकांश आवारा जीव-जन्तु खुले में शहर के प्रमुख सड़कों, सकरी गलियों और शहरी बस्तियों में सदैव टहलते रहते हैं। ये जीव-जन्तु लगातार टहलते हुए शहर के मुख्य सड़कों, सकरी गलियों और शहरी बस्तियों में मल-मूत्र करते रहते हैं। कभी-कभी तो ये आवारा जीव-जन्तु यातायात व्यवस्था के लिए भी बाधा बन जाते हैं। ये आवारा जीव-जन्तु हमेशा शहरी बस्तियों के सकरी गलियों और शहरी मुख्य सड़कों पर खड़े हुए या तो बैठे हुए मिल जाते हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रेम कुमार पटेल निदेशक / वरिष्ठ वैज्ञानिक - पी एफ ए अनुसंधान संस्थान उत्तर प्रदेश, (AWBI, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ)

How to cite this article:
पटेल, प्रेम. कुमार. (2026). जनपद प्रयागराज के जीव - जन्तुओं द्वारा शहरी क्षेत्र में स्वच्छ पर्यावरण संरक्षण पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव. Journal of research & development, 18(5(A)), 74–75. https://doi.org/10.5281/zenodo.20925449

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20925449
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

इनकी वजह से हमारे शहर के यातायात व्यवस्था पर भी व्यापक रूप से अवरोध उत्पन्न हो जाता है। इसके अतिरिक्त हमारे शहरी क्षेत्रों में इनके मल-मूत्र के कारण काफी प्रदूषण भी उत्पन्न हो जाता है। जो कि वायु प्रदूषण का भयानक रूप ले लेता है। इसके अलावा शहरी क्षेत्रों के सकरी गलियों, मुख्य सड़कों पर जीव-जन्तुओं द्वारा किए गए मल-मूत्र पानी के साथ बहकर नाले के माध्यम से तालाबों या फिर नदियों में चलें जाते हैं। इससे हमारे जल प्रदूषण में भी काफी वृद्धि इन आवारा जीव-जन्तुओं के कारण ही होती है।

निदान - इन सभी आवारा जीव-जन्तुओं के नियन्त्रण हेतु नगर निगम प्रयागराज को ठोस कदम उठाए जाने की अति आवश्यकता है। हमारे शहरी क्षेत्रों के पशुपालकों को अपने समस्त जीव-जन्तुओं का नगर निगम में पंजीकरण करवाना चाहिए। नगर निगम प्रयागराज द्वारा शहरी क्षेत्रों के पशुपालकों को अपने समस्त जीव-जन्तुओं का पालन करने हेतु पंजीकरण प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से लागू करना होगा। जो भी पशुपालक इन नियमों का उलन्घन करते हुए पायें जाय, उन पर कठोर कार्रवाई करते हुए उनके जीव-जन्तुओं को जब्त करने की व्यवस्था की जाय। शहरी क्षेत्रों में कुत्तों की समस्या से वैधानिक तरीके से निपटने हेतु नगर निगम द्वारा पशु जन्म नियन्त्रण / एण्टी रैवीज वैक्सीनेशन की परियोजना भी अनिवार्य रूप से शुरू की जाय। इसके बिना हम शहरी क्षेत्रों में कुत्तों से मुक्ति पाने की भविष्य कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

परिणाम - यदि हम समय के साथ अपने शहरी क्षेत्र के पर्यावरण को बचाने में नाकाम रहते हैं, तो आने वाले समय में हम स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यदि हमारे शहरी क्षेत्र का पर्यावरण शुद्ध रहेगा, तो हमारे जीवन काल में वृद्धि भी होगी, अन्यथा हमारे जीवन काल की उम्र आधी अथवा उससे भी कम हो जायेगी।

उपसंहार - शहरी क्षेत्रों के विकास में नगर निगम/नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत की अहम भूमिका होती है। शहर में स्वच्छता, पर्यावरण और जीव-जन्तुओं पर व्यापक तौर पर नियन्त्रण करने की पूरी जिम्मेदारी नगर निगम/नगर पालिका परिषद/नगर पंचायत की ही होती है। लेकिन नगर निगम के कुछ ऐसे भी अधिकारी हैं, जो कि शहरी क्षेत्रों में ही अवैध डेयरी तथा अवैध तरीके से जीव-जन्तुओं के पालन कराने का कार्य करते हैं। क्योंकि उन्हें शहरी क्षेत्रों के पशुपालकों द्वारा हमेशा अवैध रूप से महीनवारी कमाई भी होती रहती है। इस स्थिति में कुछ भ्रष्ट अधिकारियों के कारण शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ पर्यावरण, स्वस्थ जीवन और जीव-जन्तुओं के कारण होने वाली यातायात व्यवस्था पर नियन्त्रण की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

शब्दसंकेत - शहरी विकास, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण नियन्त्रण, यातायात व्यवस्था, स्वस्थ जीवन।

References (APA 7th Edition)

1. *Animal Welfare Board of India. (2023).* Animal Birth Control (ABC) Programme Guidelines. *Government of India.*
2. *Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2022).* National Clean Air Programme (NCAP): Guidelines and Progress Report. *Government of India.*
3. *Central Pollution Control Board. (2023).* Annual Report on Environmental Pollution in India. *Government of India.*
4. *World Health Organization. (2021).* Guidelines on sanitation and health. *WHO.*
5. *United Nations Environment Programme. (2022).* Global Environment Outlook (GEO-6): Healthy Planet, Healthy People. *UNEP.*
6. *Environmental Studies. (2021). Universities Press.*
7. *Government of India. (1960).* The Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960.
8. *Government of India. (2023).* Animal Birth Control Rules, 2023. *Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying.*
9. *National Green Tribunal. (Various years).* Judgments on municipal solid waste management and environmental protection.